केन्द्रीय विद्यालय संगठन,
भोपाल संभाग
मैदा मिल के सामने, भोपाल–462 011
दूरमाषक्रमांक 2550728(क्ष्ट)
2551678 (. स.आ.)
2551699 (प्र.अ./ले.प.एवं ले.अ.)
फैक्स: 0755–2553126
*ई–मेल:*acbhopal@yahoo.com

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN
BHOPAL REGION
Opp. Maida Mills,Bhopal-462011
Phone: 2550728 (DC)
2551678 (ACs)
2551699 (AO/FO)
Fax: 0755-2553126
E.Mail:acbhopal@yahoo.com

F.DO/2015-16 / केविसं / क्षे.का.भो /

दिनांक 21.08.2015

प्रिय प्राचार्य गण,

मैने अपने पिछले अर्द्ध–शासकीय पत्र में एक घोड़े की कहानी बताई थी, कि कैसे घोड़े को तालाब तक ले जा सकते हैं, किन्तु उसे पानी नहीं पिला सकते। एक घोड़ा कूदने, दौड़ने और भारी सामान ढोने के लिए प्रशिक्षित हो सकता है । तथापि वही घोड़ा कभी–कभी लात भी मारता है, गलत दिशा में जाता है और यहॉ तक की पानी भी तभी पीता है, जब वह पीना चाहता है। अतः प्रश्न यह है कि घोड़े का पानी न पीना आज भी उसी तरह प्रासंगिक है । क्या यह एक समस्या है या एक लक्षण है ? निश्चित रूप से यह समस्या नहीं है, अपितु एक लक्षण है । समस्या, प्यास का अभाव, जिद्दी स्वभाव, भय या आपके जबरदस्ती पानी पिलाने के तरीके से हो सकती है।

इसी प्रकार मनुष्यों के भी कार्य करने से मना करने या कार्य में रूचि नहीं लेने के कई कारण हैं, जैसे रूचि की कमी, जिद्दीपन, भय, वरिष्ठ अधिकारियों का व्यवहार या परस्पर विरोधी मांग । जिससे हम असंतोष की ओर जा रहे हैं, उन कारणों का पता लगाने एवं उनके समाधान के लिए निम्नलिखित स्थितियॉ हो सकती हैं :–

1. पुरस्कार ही प्रोत्साहित करता है। यदि पुरस्कार टीम के लिए आकर्षक है तो टीम के सदस्य अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करेगें। पुरस्कार से यह भी निर्धारित होता है कि टीम सही दिशा में प्रयासरत है ? यह आवश्यक है कि आप अपनी टीम की दिशा निर्धारित करें। आपको यह अनिवार्य रूप से पता होना चाहिए कि आपकी टीम आपकी अपेक्षाओं से भलीभांति परिचित है अथवा नहीं, उन अपेक्षाओं को कैसे पूरा करेगीं और उनके पूरा होने के उपरांत उसकी किस प्रकार संराहना होगी। बुद्धिमान लोगों से विचार विनिमय की कमी से भी हम दिशाहीनता की ओर अग्रसर होते हैं।

2. प्रबंधन का सर्वोत्कृष्ट नियम है– 'टीम को श्रेय देना और असफलता का बोझ वरिष्ठ सदस्यों पर डालना'। समुन्द्र मंथन के दौरान जब विष बाहर आया तब शिव जी ने उसे अपने कंठ में धारण कर लिया । इससे हमें यह संदेश ग्रहण करना चाहिए कि टीम के अच्छे कार्यो का श्रेय उन्हें देना चाहिए ओर उनकी असफलताओं का भार स्वयं पर लेना चाहिए। ऐसा करने से आपकी टीम न केवल परिणाम को लेकर आपके द्वारा किए गए सर्वोत्कृष्ट प्रयास को समझ पाएगी, अपितु उसका श्रेय भी आपको देगी । इससे न केवल आप अपनी टीम को उत्साहित बनाये रखेगें वरन् उनके सम्मान पर भी प्रभुत्व बना पायेंगे। यही भावना आपके बेहतर नेतृत्व गुणों को स्थापित करने में आपकी मदद करेगी।

3. टीम को प्रबंधित करने का उत्कृष्ट नियम **है– 'सराहना सबके सामने करो, परन्तु आलोचना अकेले में करो'** । अच्छे कार्य संपादन का श्रेय सार्वजनिक रूप से, तथापि आलोचना अथवा चेतावनी व्यक्तिगत होना चाहिए। जब आप आलोचना करें, तो अपनी टीम को यह भी बताएँ कि वो स्वयं को कैसे बेहतर

बनाए और वही गलती दोबारा न दोहराए। आलोचना का मुख्य उद्देश्य भी यही है कि टीम अपने कार्यो में पुनः रूचि लेने लगे, न कि काम करने में मन ही न लगा पाए ।

4. जीवन में विभिन्न प्रकार के खुशनुमा ओर चुनौतीपूर्ण अनुभव होते हैं । एक दिन तो सभी कार्य बड़ी आसानी से संपन्न होते हैं किन्तु अगला ही दिन बाधाओं से भरा होता है । आप भूतकाल के बुरे अनुभवों के कारण संकुचित महसूस कर सकते है या नई संभावनाओं के प्रति आशान्वित हो सकते हैं । आप वास्तविक आनंद प्राप्त करना तो चाहते हैं किन्तु आप आशवस्त नहीं हैं कि उसे कैसे प्राप्त किया जाये । इन्हीं विभिन्न प्रकार के अनुभवों में ही हमें जीवन की विविधता को देखने का अवसर मिलता है । इसलिए जीवन को इस परिप्रेक्ष्य में देखे और आगे बढें ।

   उपर्युक्त वर्णित परिस्थितियॉ आपकी टीम की गुणवत्ता को उन्नत करने में सहायक होगी।

   याद रखिए कि होदुनी के दिमाग में ही दरवाजा बंद था । वहीं एक स्थल है जहां वह बंद था । यदि आप यह सोचते है कि आप समस्या से बाहर नहीं आ सकते, तो इसी प्रकार के विचार ही आपके कार्यो को असंभव बनाते हैं । यह विचार ही आपके दिमाग में कैद हो गया है। इस विचार की कैद से बाहर आइए और आप पाएंगे की समस्या का निराकरण हो गया है।

शुभकामनाओं सहित,

यह पत्र उपायुक्त महोदय के अर्द्धशासकीय पत्र दिनांक 17.08.2015 के हिन्दी अनुवाद का प्रयास है ।

सादर,

(डा. (श्रीमती) बी.कौर)
सहायक आयुक्त

प्राचार्य
समस्त केन्द्रीय विद्यालय,
भोपाल संभाग

प्रतिलिपिः

सहायक आयुक्त, के.वि.सं., भोपाल संभाग को सूचना एवं आवश्यक कार्रवाही हेतु।